अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

त्याग को निभाने के लिए दृढ़ संकल्पी होना आवश्यक: महातपस्वी महाश्रमण

-त्याग और संयम से मोक्ष की दिशा में गति कर सकता है मानव

-लगभग तेरह किलोमीटर का आचार्यश्री ने किया विहार

-चतन्नूर स्थित अल-रेयान कनवेंशन सेण्टर पहुंचे आचार्यश्री महाश्रमण

14.03.2019 चतन्नूर, कोल्लम (केरल): आदमी के मन में दुःखों से मुक्त रहने की अभिलाषा भी हो सकती है। केवल मनुष्य ही सभी प्राणियों के मन में दुःख से मुक्त रहने की भावना हो सकती है। कोई भी प्राणी स्वयं के लिए दुःख को पसंद नहीं करता। सभी दुःख से मुक्त रहना चाहते हैं। मनुष्य को यदि दुःखों से मुक्त होना है, दुःख से पार पाना है तो मनुष्य को आत्म संयम रखने का प्रयास करना चाहिए। सम्पूर्ण दुःखमुक्ति तो बहुत ऊंची बात है। आदमी आत्म संयम अर्थात् स्वयं के द्वारा स्वयं का संयम रखे तो दुःखमुक्ति की दिशा में आगे बढ़ सकता है। इसके लिए आदमी को आश्रवों को निरुद्ध करते हुए संवर की साधना करने का प्रयास करना चाहिए।

गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी त्याग-संयम को बढ़ाकर आदमी आत्म-निग्रह कर सकता है और कल्याण की दिशा में गति कर सकता है। आदमी को संकल्प के माध्यम से व्यसनों को छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। चोरी, झूठ, जुआ, मद्यपान आदि अनेक व्यसनों से स्वयं को बचाने के लिए संकल्प स्वीकार करने का प्रयास करना चाहिए। व्यसनों से मुक्तता का संकल्प होता है तो जीवन में आत्म-निग्रह की बात हो सकती है। आदमी को अपने जीवन में अच्छे कार्य करने का संकल्प करना चाहिए। आदमी को बुराइयों को छोड़ने और अच्छे कल्याणकारी कार्य में रत रहने का प्रयास करना चाहिए। त्याग से इस जीवन का तो कल्याण होता ही है, आत्मा का भी कल्याण करने वाला होता है। इसलिए आदमी को अपने मन को मजबूत रखते त्याग का पालन करने का प्रयास करना चाहिए। उक्त आत्म कल्याण की बातें जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने गुरुवार को चतन्नूर स्थित अल-रेयान कनवेंशन सेण्टर में उपस्थित श्रद्धालुओं को बताईं।

इसके पूर्व प्रातः की मंगल बेला में आचार्यश्री ने बिशोप जेरोम इंस्टिट्यूट से मंगल प्रस्थान किया। आज आचार्यश्री का विहार प्रायः पूर्व दिशा की ओर था। पूर्व दिशा होने के कारण आज सूर्य आचार्यश्री के बिल्कुल सम्मुख था। उसकी किरणों की तीव्रता प्रातः से ही इतनी थी कि लोगों को सामने की ओर मार्ग पर भी देखने में काफी कठिनाई हो रही थी। आज ताप भी मानों घड़ी के कांटे की तरह चढ़ता चला जा रहा था। मार्च महीने में ही जेठ की दोपहरी का अहसास कराने वाला प्रचंड ताप भी आचार्यश्री के गतिमान चरणों को रोकने में अक्षम था। आचार्यश्री लगभग तेरह किलोमीटर का विहार कर चतन्नूर स्थित अल-रेयान कानवेंशन सेण्टर में पधारे। सेण्टर के भूतल पर स्थित हॉल में आचार्यश्री ने श्रद्धालुओं को दुःख से मुक्त रहने का मार्ग प्रशस्त किया। आचार्यश्री की अमृतवाणी इस भीषण गर्मी में भी मानों श्रद्धालुओं के लिए शीतल बयार बन गई जो लोगों को परम शांति प्रदान करने वाली थी।